International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुर्जर जाति के भोज बगड़ावत लोकगाथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सीमा वैष्णव
शोध छात्रा (समाजशास्त्र)
मेवाड़ विश्वविद्यालय,चितौड़गढ़ (राजस्थान)
डॉ. एच.एम.कोठारी
शोध निर्देशक

शोध आलेख सार – बगड़ावत लोक गाथा देवजी और बगड़ावतों से सम्बद्ध एक काव्य है जो राजस्थान में मुख्यतः गुर्जरों (भोपों) द्वारा गाया जाता है। इस काव्य के सम्बन्ध में महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री ने लिखा है कि ये भाट जातियों में सन् 1200 ई. के आसपास छोछू नामक कवि हुआ जिसने सर्वप्रथम वीर बगड़ावत बन्धुओं के विषय में कीर्ति श्लोक लिखे जिसकी संख्या 1500 बताई जाती है।

मूल शब्द – बगड़ावत, वंशावली, गुर्जर, लोकगाथा

भूमिका –

बगड़ावतों की वंशावली एवं उनके कार्यकाल – अवधि के बारे में इतिहासकारों ने कोई ठोस निष्कर्ष पेश नहीं किये है। इतिहासकारों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लैश मात्र भी रूचि नहीं दर्शायी और न ही कोई प्रबन्ध कार्यकिये। ऐसा प्रतीत होता है कि इतिहासकारों ने जानबूझकर तत्कालीन सामंती और अधिनायकवादी माहौल के कारण बगड़ावतों की महान लोकगाथा की अनदेखी क। मगर जनमानस ने इस गाथा को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाये रखा। इतिहासकारों ने बगड़ावतों की सिर्फ सुनी सुनाई बातों के आधार पर उनका ब्यौरा दिया है, जो भी अतीव सूक्ष्म और तोड़मरोड़कर। कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

सर जम्स केम्पवेल महोदय (बम्बई गजेटियर भाग 9) लिखते हैं – ''बाघरावतों के पूर्व पुरूष हरिराम जी सोलंकी बड़े वीर पुरूष थे और चौहान राजा अजयपाल से उनके सम्बन्ध थे। चामुण्डा के बाघ को मार, उसके सिर को लेकर, जब वे पुष्कर स्नान को गये, तो चौहान राजा की बहिन नील देवी, उनके वीर रूप पर मोहित हो गई और स्वयं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वर प्रथा के अनुसार उनका नील देव से सम्बन्ध हो गया। इन्हीं के पुत्र बाघजी बड़े वीर पुरूष थे, जिन्हें घूघरा घाटी जैसे खतरनाक स्थान का अधिकारी नियुक्त किया। सावन के मीन में रेशमक ा रस्सा डालकर लड़कियों को झूलने का लालच दिया और अपने गिर्द सात चक्कर लगवाकर लड़कियों को झूलाता रहा और बारह लड़कियों पर अधिकार करके उनसे विवाह सम्बन्ध कर लिये, जिनसे 24 बगड़ावत प्रसिद्ध हुय : जिनमें भोजरावत सबसे वीर पराक्रमी थे, जिन्होंने निरंकुश अत्याचारी सत्ता के मद में अहंकार भरे, उनके राजाओं और सामन्तों से लोहा लेकर प्रजातन्त्र गणराज्य कायम किये।

गुर्जर इतिहास के ख्यातिनाम लेखक श्री यतीन्द्र कुमार वर्मा लिखते हैं – ''भीनमान, राजौरगढ़ (अलवर) के अतिरिक्त 11वीं शताब्दी के अन्त और 12वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक गुर्जरों का अजमेर तथा उसके आसपास के प्रदेशों पर राज्य रहा, जो मालवे तक था। मध्यभारत और राजपूताने के गणराज्यों के अन्तिम संरक्षक भोजनावत नाम से प्रसिद्ध 24 बाघरावत (बगड़ावत) थे, जो उन्हीं की रक्षा में शहीद हुए। हमीर के पुत्र कुंतल ने गुर्जरों से राणनगर (भिणाय) लेकर जब वहां अपनी राजधानी स्थापित करली तो कुंतल के पुत्र बाघ को गोटण गांव के गुजर सरदार बाघराव के पुत्र भोज ने मार दिया और उसकी युवा रानी को जिसकी मंगनी उस से थी और जो स्वयं उसके पुरूषत्व पर मोहित थी, अपने यहां ले आये। राणा हिन्दूपतराय के साथ गुर्जरों का भयंकर युद्ध हुआ और इन युद्धों में भिणाय पर से इनका अधिकार कुछ समय के लिए हट गया। 24 भाई वीर गति को प्राप्त हुए।

बगड़ावत महागाथा के घटनाक्रम और कथानक से जाहिर होता है कि जयमती ने भोजजा के पास लग्न भेजा, उसके खाण्डे के साथ फेरे खाये, भोजा ने तोरण मारा मगर जयमती के पिता ने राण के बूढ़े राजा दुर्जनसाल के साथ भेज दिया मगर जयमती बाद में भोज के साथ गोठा गांव में राण के राजा को त्याग कर चली गई। परन्तु इतिहासकारों ने सत्यता से मुंह मोड़कर कथावस्तु से छेड़छाड़ की है। ओझा महोदय जयमती का बाघरावत से क्षत्रिय विवाह करना लिखते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बगड़ावत जी की लोकगाथा :

बगड़ावत लोकगाथा राजस्थानी लोकसंस्कृति की प्रतिनिधि गाथा है। राजस्थान की मध्यकालीन सामन्तीय संस्कृति से सम्बंद्ध यह लोकगाथा चौबीस बगड़ावत भाईयों की वीरगाथा है। राजस्थानी लोकमानस में बगड़ावतों के लिए इतना स्थान है कि इसके संबंध में निम्नलिखित कहावत प्रचलित हो गई है। माया माणी बगड़ावतां, कै लाखा फुलाणी। रही–सही सो माण गौ, हर गोविन्द नाटानी।। वीर बगड़ावतों तथा उनके वंशज देवनारायण के इस ऐतिहासिक वृत्त में लोकमानस ने अपनी कल्पना और अलौकिक घटनाओं की चमत्कारप्रियता के कारण अनेक परिवर्धन–परिवर्तन किये हैं। प्रस्तुत लोकगाथा में लोक मानस ने उनकी शक्ति में दिव्यता का आरोप कर अनेक अलौकिक घटनाओं का समावेश कर दिया है। श्रुति परम्परा के कारण मूल कथा में अनेक कथा अभिप्राय जोड़ दिये गये हैं जिससे गाथा का आकार विशालकाय हो गया है। विभिन्न गाथाकारों द्वारा कही जाने के कारण बगड़ावतों की इस कथा के भी विभिन्न रूप मिलते हैं।

बगड़ावत लोकगाथा में ऐतिहासिकता :

लोक गाथाएँ कल्पना, श्रुति, इतिवृत्त एवं अनुरंजना सम्पुटित रचना है। जो गाथाएँ ऐतिहासिक पात्रों को अपना कर चलती हैं, उनमें भी केवल नायक अथवा अन्य पात्रों के नाम ही ऐतिहासिक होते हैं। घटना व स्थानों की ऐतिहासिकता संदिग्ध ही होती है। इसका कारण है गाथा के रचयिता का अनपढ़ होना। इतिहास का ज्ञान वे श्रुत–परम्परा से ही प्राप्त हैं। अतः घटनाओं का विकृत होना स्वाभाविक है। डॉ. कृष्णकुमार शर्मा लोकगाथाओं की ऐतिहासिकता के विषय में लिखते हैं कि, ''लोकगाथाओं के अध्ययन के प्रसंग में एक बात स्पष्ट हो जाती है कि लोकगाथा को ऐतिहासिक शोध निर्देश का आधार तो बनाया जा सकता है, उससे ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त नहीं की जा सकती। ऐतिहासिक तथ्य लोकगाथा में लोकमानसीय प्रवृत्तियों के कारण प्राकल्पना युक्त हो जाती हैं, न केवल युक्त ही वरन् कभी तो अतिरेक के कारण केवल 'फैंटेसी' ही बन जाती हैं और ऐतिहासिक व्यक्ति संज्ञाएँ–लोकभाषा में आकर इतना स्वरूप बदल लेती हैं कि

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उसका मूल ज्ञात कठिन हो जाता है। लोकमानस घटनाओं और पात्रों को अलौकिकता प्रदान कर देता है, फलतः ऐतिहासिकता उनमें सुरक्षित नहीं रह पाती।.....वस्तुतः सत्य यह है कि लोकगाथा में व्यक्ति और कभी–कभी मूल घटना का आधार मात्र ही इतिहाससम्मत सिद्ध हो पाता है। शेष लोकगाथाकार की कल्पना का विस्तार होता है।''

सारांश –

बगड़ावत अजमेर के राजा बीसलदेव चौहान (विग्रहराज चतुर्थ) के वंशज थे। बगड़ावतों के पिता बाघराव बीसलदेव चौहान के समय अजमेर में ही रहते थे। बगड़ावतां के पूर्व पुरुष हरिराम चाह्वान के दृष्टि गर्भ से पुष्कर की पहाड़ियों में कोक शाह की पुत्री लीलावती से बाघराव का जन्म हुआ था। वह स्थल लीला छेवड़ी के नाम से अजमेर से पुष्कर के रास्ते में आज भी विद्यमान है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उक्त लोकगाथा के प्रमुख पात्रों के नाम, घटनायें एवं स्थान आदि ऐतिहासिक है। युद्ध का कारण ऐतिहासिक है, किन्तु लोकगाथा होने से और दीर्घ काल तक मौखिक परम्परा से चली आने के कारण लोक मानस ने कथा तंतुओं की सृजना करते हुए अनेक चमत्कारिक घटनायें जोड़ दी हैं तथा इसके अनेक कथारूप प्रचलित हो गये हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 1, January 2021,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ ग्रन्थ सूंची –

1.	आशिया, ओडजी, आशिया,शंकर सिंह, (सम्पादक एवं भाश्यकार)	पाबू प्रकाश	राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2009
2.	गहलोत, डॉ. महावीर	ढोला मारू रा दूहा	राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1986
3.	चारण, श्री चन्द्रदान	गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा	भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर, 1962
4.	चुण्डावत, लक्ष्मीकुमारी	बगड़ावत देवनारायण महागाथा	पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2007
5.	चुण्डावत, लक्ष्मीकुमारी	बाघो भारमली	राजस्थानी संस्कृति परिषद, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1962
6.	चुण्डावत, लक्ष्मीकुमारी	राजस्थानी प्रेम गाथाएँ	राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर, 2012
7.	चोयल, श्री शिवसिंह	राजस्थानी लोकगीत	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1968